बारह मुहर्रम (सुय्यम)

जहाँ में आज इब्ने साक़िए कौसर का सुय्यम है
क़तीले राहे हक़ सरदारे बहरोबर का सुय्यम है

रही जलती ज़मी पर लाश जिस मज़लूम की उरयाँ
उसी शाहे दो आलम कुशतए ख़न्जर का सुय्यम है

जो सक़्क़ाए सकीना और अलमबरदारे लशकर था
उसी दिल बन्दे हैदर गाज़िए सफ़दर का सुय्यम है

क़लम शाने हुए दरिया पा जिसके रोज़े आशूरा
करो मातम के आज उस सानिए जाफ़र का सुय्यम है

सिना सीने पा खाके जिसने अपनी जान दी रन में
इसी नूरे निगाहे शाहे दीं अकबर का सुय्यम है

जवानी रोएगी जिस पर क़यामत तक ज़माने में
इसी कड़ियल जवाँ हम शक्ले पैग़म्बर का सुय्यम है

न जो पुशते फ़रस पर कमसिनी में बैठ सकता था
ज़माने में इसी लख़्ते दिले शब्बर का सुय्यम है

शुजाअत और ग़ैरत जिसके सिन पर फ़र्ख़ करती थी
इसी नाशाद कमसिन कासिमे मुज़तर का सुय्यम है

बढ़ाया दूध जिसका हुरमुला ने अपने पैकाँ से
अज़ीज़ो आज इस नादाँ अली असगर का सुय्यम है

हुआ था क़त्ल जो-जो नुसरते शाहे दो आलम में
उड़ाओ ख़ाक आज उन गाज़ियों सफ़दर का सुय्यम है

तुझे ऐ फिक्र' जिसकी क़ब्र पर जाने की हसरत है
उसी मज़लूम तशना लब शहे बे सर का सुय्यम है